NAME OF THE COLLEGE – Godda college, Godda

SL NO	DATE	NAME OF THE TEACHER	SUBJECT	SEM	TOPIC	MODE ADOPTED
01	22.04.2020	Md Mahtab Ahmad	TC-201	B.Ed SEM.02	Teaching	Pdf

M.M. Ahmad
Dept of Education
Godda college, Godda

Scanned by CamScanner

शिक्षण का अर्थ एवं प्रकृति
(MEANING AND NATURE OF TEACHING)

डगलस व हॉलेण्ड (Douglas and Holland) के अनुसार—**"शिक्षा शब्द का प्रयोग उन सब परिवर्तनों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति के जीवन काल में होते हैं।"**

"The term 'education' is used to designate all the changes that take place in an individual during the course of his life." —**Douglas and Holland** (p. 3)

इसी प्रकार महान दार्शनिक **डा. राधाकृष्णन्** के शब्दों में—**"शिक्षा को मनुष्य और सम्पूर्ण समाज का निर्माण करना चाहिए। इस कार्य को किये बिना शिक्षा अनुर्वर और अपूर्ण है।"**

"Education should be man-making and society-making. Education without this remains poor and incomplete." —**Dr. Radhakrishnan** (p. 191)

ये दोनों वक्तव्य इस बात की ओर संकेत करते हैं कि शिक्षा तभी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकती है जब शिक्षक जिस प्रकार से निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ाता है, वह प्रक्रिया शिक्षण कहलाती है। शिक्षण का अर्थ सिखाना है। सिखाने में विधियाँ तथा पाठ्य-सामग्री, वांछित लक्ष्यों की पूर्ति के लिये प्रयोग में लाई जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में अब यह बात स्पष्ट हो गई है कि शिक्षण में केवल सीखना ही नहीं, सिखाना भी निहित है। शिक्षण की प्रक्रिया शिक्षण-अधिगम (Teaching Learning) द्वारा पूरी होती है। शिक्षण के सिद्धान्त में **एन. एल. गेज** (N. L. Gage) के अनुसार तीन प्रश्न निहित हैं—शिक्षक का व्यवहार, छात्रों का व्यवहार तथा शिक्षण का प्रभाव। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि शिक्षक द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधि की क्या प्रतिक्रिया है।

Scanned by CamScanner

सीखने के सिद्धान्तों (Learning Theories) पर तो मनोवैज्ञानिकों ने बहुत काम किया है परन्तु शिक्षण के क्षेत्र में इतना काम नहीं हो पाया। केवल अधिगम की सीमा तक ही शिक्षण का लाभ हो रहा है।

शिक्षण की प्रकृति के तथ्य
(FACTS ABOUT TEACHING)

1. सामान्य विचार की व्याख्या (Explanation of General Thought)—शिक्षण की प्रकृति सामान्य विचार की व्याख्या करती है। शिक्षण तथा निर्देश का विश्लेषण करके उसे आगे बढ़ाती है।

2. ज्ञान-भण्डार (Knowledge)—शिक्षण की प्रकृति से ही शिक्षक ज्ञान का भण्डार ग्रहण करता है। यह भण्डार शिक्षण व्यवसाय में उसे सहायता प्रदान करता है।

3. मान्यताओं का विकास (Development of Concepts)—निर्णयों को प्राप्त करने में सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक आधार प्रदान करता है। निजी धारणाओं, प्रभावों तथा मान्यताओं को विकसित करके शिक्षण व्यवसाय में सहायता देता है।

4. आधार प्रदान करना (Providing Bases)—शिक्षण कार्य का नियमन करने के लिए शैक्षिक उद्देश्य, विश्लेषण, छात्र व्यवहार आदि के विषय में पूर्ण आधार प्रदान करता है।

5. अनुकूलन (Adaptation)—शिक्षण की प्रकृति है व्यवहार का अनुकूलन। छात्रों के बीच अध्यापकों का प्रवेश ही शिक्षक की महत्त्वपूर्ण प्रकृति है।

शिक्षण-अधिगम के आधार
(BASES OF TEACHING LEARNING)

1. अभिवृद्धि पर बल (Emphasis on Growth)—शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया बालक की अभिवृद्धि पर बल देती है। इसमें (i) लक्ष्य-प्राप्ति हेतु प्रेरणा देना, (ii) अधिगम अनुभव प्रदान करना तथा (iii) वैयक्तिक विकास की प्रक्रिया निहित है।

2. कौन सिखाये (Who Should Teach)—इस बिन्दु के अन्तर्गत अध्यापक में निहित गुणों की व्याख्या निहित है। विषय का ज्ञान, शिक्षण की कुशलता के साथ-साथ मानवीय गुणों का विकास भी इसी में निहित है।

3. छात्र-शिक्षक सम्बन्ध (Teacher-Taught Relation)—इसके अन्तर्गत छात्रों तथा शिक्षक के पारस्परिक व्यवहार निहित हैं। छात्रों का मूल्यांकन इसी आधार पर होता है।

4. विज्ञान के रूप में शिक्षा (Teaching as Science)—आज शिक्षण विज्ञान का रूप लेता जा रहा है। वैज्ञानिक सिद्धान्तों का विनियोग कक्षा में किया जा रहा है।

5. शिक्षण एक कला (Teaching an Art)—शिक्षण जहाँ विज्ञान है वहाँ यह कला भी है। अनपढ़ व्यक्तियों का सुगढ़ निर्माण शिक्षक कलाकार द्वारा होता है।

6. शिक्षण एक व्यवसाय (Teaching a Profession)—**गेट्स** के शब्दों में—शायद इससे (शिक्षण) बढ़कर अन्य कोई व्यवसाय नहीं है जो हमारे प्रजातांत्रिक समाज की कार्य-प्रणाली को आधार प्रदान करता हो, क्योंकि इससे भावी नागरिकों को ज्ञान तथा सूचना देकर प्रभावित किया जाता है।

Scanned by CamScanner